मंदिरों की श्रृंखला:

पंचायतन मंदिरों से लगभग 50 मीटर पूर्व में, वर्गाकार गर्भगृह वाले सात मंदिरों की एक श्रृंखला है, जिनमें से कुल पाँच गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है, छठे मंदिर में ईंट से बना केवल एक गोलाकार योनिपीठ है, और सातवें मंदिर में शिवलिंग या अन्य किसी मूर्ति आदि के साक्ष्य नहीं है। इन मंदिरों में शिवलिंग स्लेटी रंग के पत्थर से बने हैं, जिनकी संरचना ऊपरी हिस्से में बेलनाकार और निचले हिस्से में अष्टकोणीय हैं।

गैर-धार्मिक स्थापत्य संरचनाएं:

पंचायतन मंदिर के दक्षिणी तरफ एवं इसके दक्षिणी सीमा की दीवार के समीपवर्ती भाग में पकी ईंटों से बने बरामदे और जल निकासी प्रणाली के साथ चौकोर और आयताकार आकार के कई आवासीय कक्ष स्थित हैं।

मूर्तियां और स्थापत्य कला:

मंदिरों और अन्य मंदिर वास्तु/स्थापत्य अवशेषों के अलावा, बेनीसागर पुरास्थल में बड़ी संख्या में प्रस्तर मूर्तियों के अवशेष, वास्तु संरचनाओं के अवशेष सहित मृण्मय कलाकृतियां एवं वस्तुएं भी देखी जा सकती हैं। यहाँ से प्राप्त एक अन्य स्थापत्य कलात्मक अवशेष में दो कामुक दृश्यांकन के अतिरिक्त द्वार शाखाएं, सरदल एवं प्रस्तर खंड की सतह पर उत्कीर्ण नृत्यरत शिव अत्यंत ही महत्वपूर्ण है एवं इन का सांस्कृतिक कालखंड 9वीं से 12वीं शताब्दी ईस्वी का प्रतीत होता हैं। अन्य उल्लेखनीय मूर्तियों में भैरव की एक खंडित मूर्ति है, जिसके दाहिने हाथ में तलवार और बाएं हाथ में ब्रह्मा का नरमुंड है और लकुलीश की एक खंडित मूर्ति है, जो दाहिने हाथ में कमल के साथ बैठी हुई मुद्रा में दर्शायी गई है।

लकुलीश

भैरव

सूर्य देव की प्रस्तर प्रतिमा को दोनों हाथों में कमल लिए हुए खड़ी मुद्रा में दिखाया गया है। पिंगल और दंडी को भी दर्शाया गया है। निचले हिस्से में सारथी अरुण के साथ सात घोड़े दिखाए गए हैं। अग्नि, गणेश, महिषासुरमर्दिनी, हनुमान और यमुना की कई मूर्तियां भी पुरास्थल के समीप निर्मित मूर्ति गृह (Benisagar] Sculpture Shed) में प्रदर्शित की

सूर्य

महिषासुरमर्दिनी

गयी हैं। प्राचीन सन्दर्भों में इस प्रकार के साक्ष्य इस क्षेत्र में पंचोपासना पूजा पद्धति की लोकप्रिय परम्परा की पुष्टि करते प्रतीत होते हैं। मृण्मय वस्तुओं में मुद्रांकन (sealing), इनमें बैठे हुए सिंह, छोटे पक्षियों एवं अन्य धार्मिक चिन्ह इत्यादि का अंकन, जिन्हे एकल सांचे में निर्मित किया गया है, भी अच्छी संख्या में प्राप्त हुए हैं।

शिलालेख:

यहाँ से प्राप्त एक गोलाकार मुहर, जिस पर कीलदार ब्राह्मी लिपि (Nail headed Brahmi characters) में अक्षर अंकित हैं। यह क्षैतिज रूप से द्विभाजित है और ऊपरी आधे भाग पर गोलाकार माला, कमंडल एवं दंड का अंकन हैं। इसके नीचे नौ अक्षर में एक लेख का अंकन किया गया है, जिसकी लिपि ब्राह्मी एवं भाषा संस्कृत है।

इसका पाठ है : ''प्रियंगुधियमचतुर्विद्या''। इसका अर्थ है कि प्रियंगु नामक व्यक्ति चारों वेदों में पारंगत था। लिपिशास्त्रीय अध्ययन के आधार पर इस मुहर को 5वीं शताब्दी ईस्वी का माना गया है।

स्मारक सूर्योदय से सूर्यास्त तक खुला रहता है
प्रवेश शुल्क: निःशुल्क
फोटोग्राफी की अनुमति है (without tripod)
वीडियोग्राफी शुल्क रू0- 25/-

Tel.no.: 0651-2330748,email- circleran.asi@gmail.com

अपने विरासत को बनाए रखें एवं गर्व महसूस करें

बेनीसागर

प्रत्नकीर्त्तिमपावृणु

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण
राँची मंडल, राँची

बेनीसागर या बेनुसागर (देशांतर 85° 53' 39" पूर्व, अक्षांश 21° 59' 01" उत्तर) झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम जिले के मझगांव ब्लॉक में ओडिशा की सीमा पर स्थित है, जो जिला मुख्यालय चाईबासा से लगभग 85 कि.मी. दक्षिण में है। इस स्थल को भारत सरकार के राजपत्र अधिसूचना संख्या (The Gazetted of India, Notification No. F-4-34/38F दिनांक-02/11/1938) के अंतर्गत वर्ष 1938 में संरक्षित घोषित किया गया था। स्थानीय परंपराओं के आधार पर इस स्थल का नामकरण केसनगढ़ के राजा के पुत्र एवं स्थानीय शासक बेनु राजा द्वारा निर्मित तालाब बेनीसागर या बेनुसागर के नाम पर रखा गया प्रतीत होता है। बेनीसागर तालाब लगभग 500x500 मीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है। तालाब के केंद्र में एक छोटा ऊंचा भूभाग स्थित है, जिस पर पकी ईंटों से निर्मित संरचनाएं भी प्राप्त हैं, यहाँ दक्षिण दिशा से पहुँचा जा सकता है। तालाब के पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी हिस्से की ओर कुछ टीले, जिसमें पकी ईंटों के संरचनात्मक अवशेष आंशिक रूप से देखे जा सकते हैं। तालाब के दक्षिण-पूर्वी हिस्से की ओर पकी ईंटों, लैटेराइट और खोंडोलाइट् प्रस्तर खण्डों के कुछ संरचनात्मक अवशेष भी दिखाई देते हैं।

बेनीसागर के पुरातात्त्विक अवशेषों की रिपोर्ट सर्वप्रथम कर्नल टिकेल महोदय ने वर्ष 1840 में की थी, जिन्होंने राजा बेनू की किंवदंती का दस्तावेजीकरण किया था, जिन्होंने 200 साल पहले यहाँ शासन किया था। टिकेल महोदय ने तालाब के तटबंधों के साथ रखे गए अलंकृत प्रस्तर खण्डों और मूर्तियों का उल्लेख किया है, जो उनके अनुसार संभवतया, तालाब के चारों निर्मित मंदिरों के भग्नावशेष से संबंधित हो सकते हैं, इसके अतिरिक्त उन्होंने तालाब के केंद्रीय ऊंचे भूभाग पर एक मंदिर के अवशेष की जानकारी भी अपने रिपोर्ट में दी है।

कर्नल टिकेल ने बेनीसागर तालाब के दक्षिण-पूर्व की ओर गढ़ क्षेत्र एवं किलेबंदी (Gadhi or Fortress) के अवशेषों का वर्णन किया, जो अपने चतुर्दिक कोनों पर बुर्जों एवं मीनारनुमा ऊर्ध्वाधर संरचनाओं से युक्त विशाल दीवारों के साथ निर्मित है, किले के केंद्र में स्थित कुछ विकृत/खंडित मूर्तियों के साक्ष्य भी उन्हें मिले। किले से लगभग 300 गज आगे दक्षिण में, उन्होंने एक और ईंट का टीला देखा जिसे स्थानीय लोगों द्वारा राजा की कचहरी कहा जाता था।

तदुपरांत, वर्ष 1875 में, जे.डी. बेगलर ने इस स्थल का निरीक्षण किया और इस स्थल पर हिन्दू देवी- देवताओं गणेश, काली, महिषासुरमर्दिनी की मूर्तियों के साथ-साथ उत्कृष्ट नक्काशीदार एवं अलंकृत प्रस्तर खण्डों की मौजूदगी का उल्लेख किया और उन्हें 7वीं शताब्दी ई. का बताया। उन्होंने इस स्थल पर कुछ जैन प्रतिमाओं का भी उल्लेख किया, जो बाद में ब्राह्मणवादी प्रकृति की साबित हुईं। बेगलर महोदय ने बेनीसागर तालाब तटबंध के दक्षिण-पूर्व कोने के पास नक्काशीदार पत्थरों और मूर्तियों का भी उल्लेख किया, जैसा कि पहले टिकेल महोदय ने बताया था।

पुरातात्त्विक अवशेष

बेनीसागर पुरास्थल पर सात अलग-अलग मंदिरों एवं सहायक उप-मंदिरों के पुरातात्त्विक अवशेष हैं, जिनमें से अधिकांश शिव को समर्पित हैं। इसके अलावा यहाँ आवासीय संरचनाएं, गणेश, भैरव, लकुलीश, सूर्य, महिषासुरमर्दिनी, यमुना सहित अन्य लघु हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियाँ, मृण्मय वस्तुएँ, अभिलिखित प्रस्तर खंड आदि हैं। यहाँ भगवान शिव को समर्पित कई मंदिर अवशेष हैं जो संभवतः अष्टशंभु की अवधारणा से संबंधित हैं, जो पूर्वी भारत में प्रारंभिक मध्ययुगीन और मध्यकाल के दौरान एक लोकप्रिय उपासना पद्धति थी ।

बेनीसागर तालाब के केंद्रीय भाग में स्थित द्वीप पर मंदिर अवशेषः

बेनीसागर तालाब के मध्य, अपेक्षाकृत ऊँचे भाग में स्थित द्वीप पर पूर्वोन्मुख दीवार के भीतर संलग्न चौकोर चबूतरे के आकारनुमा पकी ईंटों से निर्मित मंदिर के अवशेष हैं। यहाँ एक पकी ईंटों का चबूतरा उद्घाटित हुआ जिसमें ईंटों के कुल 12 तह लगे हुए हैं एवं ऊंचाई 72 से.मी. है। पूर्व दिशा से चबूतरे के लिए तीन सीढियाँ निर्मित की गयी थी। यह चबूतरा 67 से.मी. चौड़ी दीवार से घिरा हुआ है। चबूतरे एवं दीवार के बीच की जगह परिक्रमा के उद्देश्य से बनाई गई थी। पूर्वी दीवार के बीच या केंद्र से एक ईंट की संरचना जुड़ी हुई है। इस संरचना की लंबी धुरी पूर्व-पश्चिम दिशा में उन्मुख है, जबकि इसका सबसे पूर्वी भाग अर्ध-वृत्ताकार या चंद्रशिला प्रकार का है। प्रवेश द्वार के दोनों ओर, पानी को संग्रहीत करने के लिए कुण्ड का निर्माण किया गया था और आंतरिक रूप से टैंक से जुड़ा हुआ था।

बेनीसागर तालाब के पूर्वी तट पर स्थित मंदिरः

पकी ईंटों से निर्मित एक शिव मंदिर तालाब के पूर्वी किनारे के केंद्र में स्थित है। मंदिर में 42 से.मी. ऊंचाई के आकार का शिवलिंग है, जो गर्भगृह में ईंटों से बने एक आयताकार योनिपीठ के केंद्र में स्थापित है। इसके दो भाग हैं, ब्रह्मभाग (एक अष्टकोणीय निचला भाग) और रुद्रभाग (ऊपरी भाग)। स्नान घाट भी किनारे पर जुड़ा हुआ है जिसमें ईंट की लड़ियाँ तालाब के पानी तक जाती हैं। तालाब के केंद्र में मंदिर और ये दोनों संरचनाएँ एक दूसरे के साथ संरेखित हैं। ये दोनों मंदिर गुप्त और उत्तर गुप्त काल (5वीं से 6ठी शताब्दी ई.) के हैं। तालाब के पूर्वी किनारे पर एक और ईंट का मंदिर स्थित है, जिसमें एक छोटा चौकोर गर्भगृह है, जो पूर्व की ओर 1-22 मीटर चौड़े आयताकार मंडप के लिए खुलता है इस मंदिर के उत्तर में, अनुष्ठानिक उद्देश्य के लिए निर्मित आयताकार ईंट के अवशेष हैं। संरचना का फर्श चारों तरफ से ढलानदार है। आगे उत्तर में बरामदे के साथ एक आयताकार ईंट संरचना है, जिसका उपयोग संभवतः आवासीय और स्टोर उद्देश्य के लिए किया जाता था।

देवस्थान (दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र) में मंदिरः

तालाब के दक्षिण-पूर्व की ओर, त्रिरथ शैली में निर्मित, लेटेराइट पत्थर से बना एक और छोटा मंदिर स्थित है। स्थापत्य की दृष्टि से इस मंदिर का निर्माण 9वीं से 10वीं शताब्दी ई. में हुआ माना जा सकता है। तालाब के दक्षिण-पूर्व तटबंध की ओर पत्थर और ईंटों से बना एक पंचायतन मंदिर स्थित है, जिसे देव स्थान भी कहा जाता है। इसका गर्भगृह त्रिरथ योजना में निर्मित है। इसमें अंतराल (मध्य भाग) और मंडप भी है। दो द्वार चौखट भी हैं, जिनमें द्वार रक्षक के रूप में खड़े शिव बाएं हाथ में त्रिशूल पकड़े हुए हैं। मंदिर में ईंटों से बना आयताकार बरामदा है। इसमें आयताकार योनिपीठ के साथ शिवलिंग वाले चार सहायक मंदिर भी हैं। इस पंचायतन मंदिर से लगभग 04 मीटर दक्षिण में, पूर्व की तरफ से प्रक्षेपित प्रवेश द्वार वाले एक कुंड के अवशेष हैं, कुंड के चारों ओर बहुत सुंदर ईंटों का फर्श बिछाया गया था, लेकिन सामने के हिस्से में ईंटों के फर्श के ऊपर लैटेराइट प्रस्तर खंड लगाए गए थे। कुंड के पूर्व में लैटेराइट प्रस्तर खंडों से बना एक और शिव मंदिर है, जिसके गर्भगृह में शिवलिंग है और उत्तर दिशा की ओर उन्मुख गोलाकार योनिपीठ है। ऊपर वर्णित पंचायतन मंदिर के उत्तर-पश्चिमी उप-मंदिरों के पश्चिम में गर्भगृह में शिवलिंग वाले भगवान शिव के कई छोटे मंदिर स्थित हैं।